कलियुग के चमत्कारी देव : विष्णुअवतारी बाबा गंगाराम

भारत भूमि का कोना कोना भक्ति और आस्था से परिपूर्ण है। राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र सदैव से ही देव मंदिरों एंव धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र रहा है। इसी क्षेत्र के झुंझुनूं नगर में स्थित है, श्री पंचदेव मंदिर जो विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम का अवतरण स्थल होने के कारण अपनी विशिष्ट पहचान बनाये हुए हैं। आज इस देवस्थान के प्रति लोगों की श्रद्धा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विशुद्ध धार्मिक वातावरण में निर्मित इस भव्य मंदिर की आकर्षक बनावट, उच्च वास्तुशिल्प एवं वैभव मंत्रमुग्ध कर देने वाला है।

मंदिर के मुख्य गर्भगृह में स्थापित है, विष्णुअवतारी बाबा गंगाराम का श्रीविग्रह। बाबा की प्रतिमा अत्यन्त आकर्षक एंव दिव्य तेजोमय है। इसके बांई ओर दो अलग–अलग मंदिरों में भगवती दुर्गा एवं वीर हनुमान की विशाल प्रतिमायें स्थापित हैं। दाहिनी ओर महालक्ष्मी एवं शिव परिवार की मूर्तियां स्थापित है। इसप्रकार इन पांच देव मंदिरों को बनाकर ही इस मंदिर का नाम पंचदेव मंदिर पड़ा। बाबा के परम आराधक भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन ने गंगादशहरा सन् 1975 में इस पावन धाम की स्थापना की थी।

जन आस्था है कि कलियुग में श्रीहरि विष्णु ने बाबा गंगाराम के रूप में झुंझुनूं में अग्रवंशीय वैश्य कुल में श्री झूथारामजी एंव माता लक्ष्मीदेवी के यहां श्रावण शुक्ल दशमी सन् 1895 को अवतार ग्रहण किया। इनका प्रादुर्भाव होते ही एक दिव्य प्रकाश फैल गया और वातावरण में एक अलौकिक तेज छा गया। स्तब्ध परिजन इसको परमपिता परमेश्वर की लीला समझकर हर्ष से पुलकित हो गये। युवा होते–होते बाबा के उद्गारों और चमत्कारों की चर्चा आम हो चली थी। बाबा के कुछ ही क्षणों के सानिध्य से लोगों के कष्ट दूर होने लगे। बाबा गंगाराम भी झुंझुनूं में धार्मिक वातावरण और भगवद्भक्ति का प्रसारण करते हुये उत्तर प्रदेश के कौशल प्रदेश में पधारे एंव बाराबंकी जनपद के सफदरगंज नामक स्थान में कल्याणी नदी के तट को अपनी कर्मभूमि बनाया।

उसी समय की बात है कि एक बार जब बाबा कल्याणी के पावन जल में स्नान व तर्पण आदि से निवृत होकर बाहर निकल रहे थे, तो वहां उपस्थित भगवद्भक्तों ने जल में बाबा की परछाई देखी, जो दिव्य रूप धारण कर मुस्कुराते हुये सबको आशीर्वाद दे रहे थे। जब यह बात धीरे–धीरे फैली तो सभी आश्चर्यचकित और किंकर्तव्यविमूढ हो गये। बाबा गंगाराम मात्र 42 वर्ष की आयु में स्वधाम प्रयाण कर गये। आज देश के हर छोटे बड़े नगर में बाबा के मन्दिर ट्रस्ट एंव सेवा समितियां हैं। श्री पंचदेव मंदिर की स्थापना का पुनीत कारण यही है कि बाबा की कृपा से विश्व शान्ति एंव जनकल्याण का मार्ग प्रशस्त हो।

मुख्य मंदिर के दाहिनी ओर बाबा के परम साधक एवं मंदिर के संस्थापक भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन और परम आराधिका माता गायत्री देवी की समाधि बनी हुई है। मंदिर स्थापना के पश्चात ये बाबा की भक्ति में इस प्रकार लीन हो गये थे कि उन्होंने सांसारिक अग्नि परीक्षाओं से गुजरते हुये भी अपनी सारी सम्पदा और धन दौलत को क्षण भर में त्याग दिया, जो आज के भौतिक युग में एक उदाहरण बन गया है।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन के महाप्रयाण के समय दिः 21.4.92 को उनके पार्थिव शरीर से अनेकों अलौकिक चमत्कार हुये। जब उनकी धर्मपत्नि शक्तिस्वरूपा गायत्रीदेवी ने अपने दोनों हाथ उठाकर बाबा से कोई चमत्कार दिखाने के लिये करूण पुकार की, उसी समय भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन का दाहिना हाथ जलती हुई चिता से उपर उठकर आशीर्वाद देता हुआ हिलने लगा, मस्तक से जल की धार निकलने लगी और चेहरा बालरूप में परिवर्तित हो गया। ये किसी पौराणिक कथा के अंश नही हैं वरन् उस समय खींचे गये छायाचित्र आज भी समाधि स्थल पर देखे जा सकते हैं। इसप्रकार बाबा गंगाराम की लीला में एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया।

बाबा के दरबार में सच्चे मन से की हुई कोई भी प्रार्थना निष्फल नही होती। 'चमत्कार को नमस्कार' की कहावत यहां सही रूप में चरितार्थ हुई है। त्याग, तपस्या एंव सत्य का जो अभूतपूर्व वातावरण इस मंदिर से प्रसारित हुआ है, उसके कारण यह मात्र पूजास्थल न होकर अध्यात्म और शान्ति का अग्रदूत बन गया है।

सभी मनोकामनायें पूरी करते हैं बाबा गंगाराम

देवभूमि भारत को अवतारों की क्रीड़ा–स्थली कहा जाता है। इस पवित्र भूमि में भगवान श्रीराम, योगीराज श्री कृष्ण, महात्मा बुद्ध एवं महावीर स्वामी जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया। गीता के श्लोक ''यदा यदाहि धर्मस्य .....'' के अनुसार जब–जब धर्म की हानि होती है तब–तब भगवान धरती पर अवतार लेते है। ईश्वर ने स्वयं पग पग पर अनेक चमत्कारों से अपनी उपस्थिति का भान मनुष्य को कराया है। राजस्थान के झुंझुनूं नामक स्थान में सन् 1895 ई. में ऐसे ही एक अवतारी दिव्यात्मा बाबा गंगाराम ने जन्म लिया, जिन्हें आज लोग विष्णुअवतारी बाबा गंगाराम के नाम से घर–घर में पूज रहे हैं। सीकर–लोहारु राजमार्ग पर एक विस्तृत भू–भाग पर अवस्थित है श्री पंचदेव मंदिर, जो विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम का अवतरण स्थल होने के कारण अपनी अलग पहचान बनाये हुए है।

इस देवस्थान के प्रति लोगों की श्रद्धा दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। देश के कोने – कोने से भक्तगण बाबा के दरबार में आते है और अपनी श्रद्धा व भक्ति से बाबा की आराधना करते है। यह भक्तों की श्रद्धा व विश्वास का ही फल है कि उनकी सभी मनोकामनायें बाबा के दरबार में अवश्य पूरी होती है। प्रथम तो बाबा की चित्ताकर्षक प्रतिमा के दर्शन से ही श्रद्धालुओं के सारे आन्तरिक क्लेष स्वतः ही नष्ट हो जाते है एवं जो दिव्यानुभूति होती है, उससे जीवन में नई शक्ति का संचार होता है। यह सब स्वयं अनुभव करके ही जाना जा सकता है।

जहां बनते हैं, भक्तजनों के बिगड़े काम।
ऐसा पावन है, बाबा गंगाराम का पंचदेव धाम।।

मंदिर के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही प्राकृतिक हरीतिमा से आच्छादित मनोहारी वातावरण एवं मन्दिर के आध्यात्मिक परिवेश से मन में एक दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। मंदिर की संरचना एवं बाबा के श्रीविग्रह की प्रतिष्ठा भी दैवकृपा से इस प्रकार बन पड़ी है कि सूर्योदय की प्रथम किरण भी बाबा की चरण वन्दना करती प्रतीत होती है। यह मंदिर अल्पकाल में ही लोगों की अपार आस्था का केन्द्र बिन्दू बन गया है।

विशुद्ध धार्मिक वातावरण में निर्मित इस भव्य मंदिर की आकर्षक बनावट, उच्च वास्तुशिल्प एवं वैभव मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। नगरीय कोलाहल से दूर सुरम्य एवं शांतिमय वातावरण में स्थित मंदिर के तीन उन्नत आकर्षक शिखर कलश दूर से ही दिखाई देने लगते हैं। इन पर विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां उकेर कर बनाई गई है। मंदिर के शिखर पर फहराता हुआ धर्म–ध्वज ऐसा आभास देता है मानों सारे विश्व में शांति का संदेश फैला रहा हो

मंदिर में प्रवेश करते ही अभीष्ट फलदाता सत्यनारायण स्वरुप बाबा की प्रतिमा के दर्शन होने लगते है एवं कदम स्वयं ही गर्भगृह की ओर बढ़ने लगते है एवं दर्शन की लालसा लेकर जाने वाला श्रद्धालू भाव–विभोर होकर नतमस्तक हो जाता है। मुख्य गर्भगृह के बाई ओर निर्मित दो अलग–2 गर्भगृहों में मां दुर्गा व आंजनेय हनुमान की विशाल प्रतिमाएं स्थापित है। इसी प्रकार दाहिनी ओर पद्मासन पर धन की दात्री देवी लक्ष्मी की प्रतिमा है एवं अन्य गर्भगृह में त्रिदेवों के देव भगवान शंकर का लिंग स्थापित है। जिसके साथ ही मां पार्वती, गणेश और कार्तिकेय आदि शिव परिवार की मूर्तियाँ है। सभी देव प्रतिमाएं सफेद

संगमरमर से निर्मित है एवं कला की उत्कृष्ट कृत्तियां है। इस प्रकार इन पाँच देव मंदिरों के कारण ही इस मंदिर का नाम 'पंचदेव मंदिर' पड़ा। आज यही नाम सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित है।

मंदिर में नियमित रूप से सात आरतियाँ होती है। इस देवस्थान का निर्माण बाबा के परम आराधक भक्त शिरोमणि श्री देवकीनन्दन ने बाबा के स्वप्नादेश के पश्चात् झुंझुनूं में करवाया एवं गंगादशहरा (ज्येष्ठ शुक्ल दशमी) वि.स. 2032 (सन् 1975) के पावन दिन जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ पुरी के सान्निध्य में पंचदेव मंदिर का प्रतिष्ठा समारोह पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

मंदिर सभागार के ऊपर दक्षिण भारतीय शैली में गोपुरम बना हुआ है, जिसमें भगवान विष्णु की विशाल प्रतिमा गरूड़ पर विराजमान है। दोनों ओर भगवान के पार्षद जय–विजय की मूर्तियाँ है। भगवान के आयुध शंख और चक्र मूर्तिरुप में दायें–बायें उपस्थित है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर बनाये गये भित्तिचित्र बाबा की लीलाओं को प्रदर्शित करते हैं। इस विशाल मंदिर का कलात्मक शिल्प, मनोहारी दृश्य एवं आध्यात्मिक वातावरण ब्रह्मानंद की अनुभूति कराता है।

मंदिर के कण–कण में भक्त शिरोमणि देवकीनंदन एंव परम आराधिका गायत्री देवी के त्याग, तपस्या व बलिदान की गूंज सुनाई देती है, जिन्होंने विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम की लीलाओं व महिमा को जन–जन तक पहुँचाने के लिए अभूतपूर्व बलिदान किया। समाधि स्थल पर परमभक्त देवकीनन्दन की चिता पर हुए चमत्कारों का विस्तृत विवरण मिलता है।

मन्दिर में मुख्य समारोह गंगादशहरा को स्थापना पर्व के रुप में आयोजित होता है। इसके अलावा श्रावण शुक्ल दशमी को जन्मोत्सव एवं वैशाख बदी चतुर्थी को आशीर्वाद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसे उत्सवों में देश के कोने–कोने से श्रद्धालु, भक्तगण, विद्वान एवं कलाकार भाग लेने के लिए आते है। मन्दिर परिसर में ही विशाल सत्संग भवन, धर्मशाला, यज्ञशाला, प्याऊ, बगीचा, कुआं व मेला ग्राऊंड इत्यादि स्थित है। मन्दिर का संचालन ट्रस्ट द्वारा होता है। बाबा गंगाराम के दरबार में सच्चे मन से की गई कोई भी प्रार्थना निष्फल नहीं होती। 'चमत्कार को नमस्कार' की सदियों पुरानी कहावत यहां सही रुप से चरितार्थ हुई है। मंदिर में कोई आडम्बर नहीं है, कोई दिखावा नहीं है, यहाँ हर व्यक्ति समान है, यानी सभी बाबा के दरबार के सेवक है–

नहीं दिखावा नहीं छलावा, नहीं कोई आडम्बर है,

बाबा गंगाराम धाम ये, कितना पावन सुन्दर है।
नई साधना, नई उमंगे, नई ब्रह्म की ज्योति है,
विष्णु अवतारी की लीला, नई वहाँ नित होती है,
धरती पर वैकुण्ठ वहीं है, वही पे क्षीर समुन्दर है।
सोने , चांदी , हीरों का ना, त्याग वहां का आभूषण,
भक्ति के ही तेजपुँज से , चमक रहा है एक–एक कण
देवकीनंदन की गाथायें, गूंजे जिसके अन्दर है ।

सनातन धर्म के प्रति लोगों की जागरूकता को बढ़ाने हेतु ही संकीर्त्तन, सत्संग, भागवत एवं यज्ञादि के बड़े–2 आयोजन मंदिर में ही नहीं अपितु देश के कोने–कोने में मंदिर द्वारा संचालित समितियों द्वारा आयोजित होते हैं। त्याग, तपस्या एवं सत्य का जो अभूतपूर्व वातावरण इस मंदिर से प्रसारित हुआ है, उसके कारण यह मात्र पूजा स्थल न होकर अध्यात्म एवं शांति का अग्रदूत बन गया। यही कारण है कि देश विदेश में इसके भक्तों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

बाबा गंगाराम का माता पिता को दिव्य दर्शन

जन आस्था है कि कलियुग में श्री हरि विष्णु ने बाबा गंगाराम के रूप में राजस्थान के शेखावाटी प्रदेशान्तर्गत झुझुनूं नगर (प्राचीन मत्स्य देश और सरस्वती नदी का भू–भाग) में अग्रवंशीय वैश्य कुल में झुथारामजी एवं माता लक्ष्मी देवी के यहां श्रावण शुक्ल दशमी सन् 1895 ई. को अवतार ग्रहण किया।

भारत भूमि इसलिए भी पूजनीय रही है कि जब–2 आसुरी शक्ति का प्राबल्य होता है और उससे पीड़ित होने के कारण संतों एवं भक्तों ने आर्त्त पुकार की है, तब–2 प्रभु ने अपने वचनों को सत्य करने हेतु यहाँ मनुष्य रूप में अवतार लिया है।

जब मर्यादा पुरूषोतम बन आया , तो जग में राम बना ,
कभी कृष्ण रूप में गोकुल के , ग्वालों संग माखन चोर बना।
कभी परशुराम बलराम बना, क्षत्रियकुल यदुकुल नाश किया ,
अब गंगाराम का रूप बना, हृदय की पूरी आश किया ।।

प्रभु के अवतार ग्रहण की यह प्रक्रिया स्थान, काल व प्रयोजन के अनुसार सम्पन्न होती है। दुष्टों का संहार और भक्तों पर कृपा तो प्रभु के संकल्प मात्र से ही हो सकती है, किन्तु यह भक्तों की प्रीति का ही विधान है कि प्रभु को यह मर्त्यलोक आकर्षित कर लेता है और वे इसके लिए स्थान, काल, परिवार आदि चुन लेते है, इसी हेतु श्री रामचन्द्रजी ने अयोध्या और रघुवंश तथा श्री कृष्ण भगवान ने बृजभूमि और यदुकुल को चुना था। विष्णु अवतारी बाबा गंगारामजी की महिमा को शब्दों में बखान करना असम्भव है। कलियुग के इस चमत्कारी देव की चारों ओर जय–जयकार हो रही है। जो भी बाबा को सच्चे हृदय से मनाता है, उसकी सभी मनोकामनाएं बाबा अवश्य पूरी करते है। बाबा गंगाराम के इस अर्चावतार व जन– जन पर बरसती उनकी कृपा ने कलियुग के प्रभाव से त्रस्त मानव को एक नई किरण दिखाई है।

झुंझुनूं नगर के मध्य में आज भी वह विशाल हवेली मौजूद है जिसे बाबा गंगाराम ने अपनी जन्मभूमि होने का सम्मान प्रदान किया। मोदीगढ़ के नाम से प्रसिद्ध यह स्थान आज भी पावन तीर्थ के रूप में भक्तों की श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। बाबा गंगाराम ने पृथ्वी पर अवतरित होने से पहले ही पिता श्री झुथारामजी व माता लक्ष्मी देवीजी को अपने दिव्य रूप के दर्शन करा दिये थे। बाबा का प्रादुर्भाव होते ही दिव्य प्रकाश फैल गया और वातावरण में एक अलौकिक तेज छा गया। स्तब्ध परिजन इसको परमपिता परमेश्वर की लीला समझकर हर्ष से पुलकित हो गए।

धन्य – धन्य है माता लक्ष्मी, झूथारामजी धन्य हुए ।
जिनके घर में विष्णु अंश से गंगारामजी प्रगट हुए ।।

बाबा गंगाराम की अलौकिक लीलायें

कुछ दिनों पश्चात् बाबा के नामकरण संस्कार का अवसर आया। पितामह शिवप्रसाद जी ने विद्वान कुल पुरोहित को बुलवाया। बाबा के जन्म के ग्रह नक्षत्रों को देखकर वे विस्मय से भर गये। उन्होनें बताया कि इस बालक के योग एवं लक्षण दिव्य और अवतारी पुरूषों के समान है। यह बालक गंगा के समान पावन व राम के समान मंगलकारी होगा, अतएव इसका नाम 'गंगाराम' होगा–

गंगाराम रस बहता निर्मल, ज्यों धारा जल गंगा है ।
ब्रह्म शक्ति का संगम है, यहाँ मिली राम संग गंगा है।।

युवा होते–2 बाबा के उद्‌गारों एवं चमत्कारों की चर्चा सर्वविदित हो गई थी। उनके मुख से निकली कोई भी वाणी निष्फल नहीं होती थी। बाबा के कुछ ही क्षणों के सानिध्य से लोगों को ब्रम्हानंद की अनुभूति होती थी। उन्होंने अपने ज्ञान, दर्शन और आचरण से सभी का मन मोह लिया। बचपन में ही माता–पिता को धर्म का उपदेश देकर चमत्कृत कर दिया।

एक बार की बात है उनकी माता लक्ष्मीदेवी ने श्री सत्यनारायण व्रत का समारोहपूर्वक उद्यापन किया। सभी तैयारिया हो गई परन्तु आमंत्रित ब्राह्मण देवता अभी तक नहीं पधारे थे। मुहूर्त व भोजन का समय निकला जा रहा था। उनके घर पता करवाया गया तो मालुम हुआ कि वे गत दिवस से ही बाहर गये हुए है, कब तक लौटेगें कहना मुश्किल है। सभी चिंतित थे। बालक गंगाराम सबको चिंतातुर देखकर व्यथित हो रहे थे। इतने में ही सबने देखा कि बालक गंगाराम ब्राह्मण देवता को लेकर पधार रहे है। चारों और प्रसन्नता छा गई। पूजन, भोजन इत्यादि का सभी कार्य पूर्ण हो गया और सभी को ससम्मान विदाई दे दी गई। इस घटना के दूसरे दिन ही ब्राह्मण देवता घर पर पधारे और समारोह में नहीं पधारने के लिए क्षमा– याचना करने लगे। परन्तु जब सभी ने उनके आने और सारे घटनाक्रम की जानकारी दी तो सभी एक– दूसरे का मुंह देखने लगे। कुछ लोगो ने इसे ब्राह्मण देवता का भ्रम समझा और कुछ लोग जो बालक– गंगाराम के प्रभाव को जानते थे, आनन्दातिरेक से भर गये।

भक्तों का दुख हरने आये, विष्णु के अवतारी ।
गंगाराम के रूप में आये, जग के पालनहारी ।।

ईश्वर अपनी दिव्यता को अपने जीवनकाल में कब प्रगट होने देते है उनका जीवन स्थान व काल के वशीभूत नहीं होता। बाबा गंगाराम को परिवार का वैभव, राजसी जीवन व हवेली की ऊंची ऊंची दीवारें रोक नहीं पाई और वे सात्विक वातावरण का प्रसारण करते हुए प्राचीन कौशल प्रदेश और आज के उत्तरप्रदेश स्थित बाराबंकी जनपद में सफदरगंज नामक स्थान में पावन कल्याणी नदी के तट पर पधारे। इसी स्थान को कर्मभूमि बनाकर बाबा ने अपने अल्पकालीन जीवन का उत्तरार्ध यहीं व्यतीत किया।

जिस प्रकार सूर्य को ढका नहीं जा सकता, उसी प्रकार बाबा का देवोपम तेज और प्रखर होता गया। पहले कल्याणी नदी एक बरसाती नदी के रूप में कुछ समय के लिए बहा करती थी, परन्तु बाबा के वहां आगमन के पश्चात् वह एक बारहमासी नदी के रूप में प्रवाहित होने लगी। इसी कल्याणी के पावन जल में बाबा ने अपने विष्णुरुप का आभास भक्तों को कराया था। एक बार की बात है कि नित्य स्नान व तर्पण आदि से निवृत्त होकर बाबा कल्याणी नदी के जल से बाहर निकल रहे थे। उसी समय वहाँ उपस्थित कुछ संतों और भक्तों ने जल में बाबा की परछाई देखी, जो विष्णुरुप धारण किए हुए मुस्कुराकर सबको आशीर्वाद दे रहे थे। यह बात धीरे–2 सब ओर फैल गई, परन्तु प्रभु अपनी माया दिखाकर वापस छिपा लेते है।

यहीं पर बाबा ने राधाकृष्ण मंदिर प्रतिष्ठापित करवाया और अपने ही एक स्वरुप की अपने हाथों पूजा कर यही दिखाया कि ब्रह्म एक है और इस प्रकार कलियुग में पूजा अर्चन का महत्व प्रतिपादित किया। वे नित्य कल्याणी नदी के जल से अभिषेक और पारिजात के पुष्पों से भगवान शिव की उपासना किया करते थे।

शास्त्रों में वर्णित 'परोक्षप्रियाहिदेवाः प्रत्यक्षद्विषः' मतानुसार देवता छिपकर ही कार्य करना पसन्द करते है। जैसा कि भक्त प्रहलाद ने भागवत में कहा है–'' प्रभु आप मनुष्य, पशु, पक्षी, ऋषि, देवता, मत्स्य आदि अवतार लेकर लोकों का पालन तथा विश्व के द्रोहियों का संहार करते है। इन अवतारों द्वारा आप प्रत्येक युग में उसके धर्मो की रक्षा करते है, कलियुग में आप छिपकर लीला करतें हैं, इसलिए आपका एक नाम त्रियुग भी है'' (भागवत 6/9/31)

झुंझुनूं में श्री पंचदेव मंदिर निर्माण का आदेश

बाबा गंगारामजी के जीवन काल में इनकी शक्ति व महिमा का ज्ञान कुछ ही भाग्यशाली व्यक्तियों को था क्योंकि बाबा ने अपनी दिव्य लीलाओं का स्थल इस कलुषित मृत्युलोक को नहीं बनाया था, उनकी लीलाएँ तो विष्णुलोक से अनुष्ठित होनी थी। बाबा के मन में जन–जन की वेदना व्याकुल किए रहती थी। वे स्थान–स्थान पर विचरण कर लोगों की पीड़ा, व्यथा और कलियुग के प्रभाव को देखकर व्यथित रहते थे। शायद उनके अवतार

का प्रयोजन भी यही था। वे स्वयं मानव रूप धरकर मानवमात्र की पीड़ा का अनुभव कर लेना चाहते थे। कलियुग में जबकि जप, तप और यज्ञ का निर्वाह होना सम्भव नहीं रह गया, एकमात्र भक्ति से ही प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार 42 वर्ष की अल्पायु में ही पौष शुक्ला चतुर्थी सन् 1938 को ब्रह्म मुहूर्त में बाबा कल्याणी नदी के पावन तट पर स्थित वट वृक्ष के नीचे स्वधाम गमन कर गए।

त्रेता में श्री राम बने, द्वापर में घनश्याम,
कलियुग में हरिरुप धरे हैं बाबा गंगाराम।।

विष्णुअवतारी बाबा गंगाराम के स्वधाम गमन के समय उनके परमभक्त पुत्र देवकीनंदन मात्र 6 वर्ष के बालक थे। बाबा ने अपनी भक्ति का तेज भक्त देवकीनंदन में भरते हुए कहा था कि यह बालक कलियुग में भक्ति का अमर इतिहास लिखेगा और मेरे अवतार प्रयोजन को सार्थक करेगा। मैं स्वधाम जा रहा हूँ और देवलोक से अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करुंगा। मेरी भक्ति और आराधना से सभी मनोरथ पूरे होगें।

उनके स्वधाम गमन के समय उस वट–वृक्ष में अद्‌भुत कम्पन हुआ। बिना किसी प्रवाह के ही उसका एक–एक पत्ता हिलने लगा। शायद वह वट–वृक्ष भी अपनी विरह वेदना प्रकट कर रहा था। उस वृक्ष का नाम देहोत्सर्ग वट–वृक्ष पड़ गया, जो आज भी वहाँ मौजूद है। आज सफदरगंज भक्तों के ह्रदय में एक तीर्थस्थल बन गया है, और वे वहाँ की भूमि का दर्शन करने जाते है। वहाँ स्वप्रतिष्ठित श्री राधाकृष्ण मंदिर, पुण्यतोया कल्याणी नदी, देहोत्सर्ग वटवृक्ष, श्री लक्ष्मी कूप एवं समीप ही श्री कुंतेश्वर महादेव और पौराणिक कालीन अद्‌भुत पारिजात वृक्ष आदि दर्शनीय स्थान है। बाबा ने अपने जीवन काल में किसी को भी अपना शिष्य या अनुयायी नहीं बनाया था ।

किसी कवि ने सत्य ही कहा हैः–

'त्रेता में श्रीराम आये, जग जाने भगवन आये थे ।
परशुराम थे विप्र भयंकर, द्वितीय राम कहलाये थे।।
द्वापर में यशुदा के आंगन, तृतीय राम हुए बलराम।
कलियुग में भव का दुख हरने आये बाबा गंगाराम।।

श्री बाबा गंगारामजी के विष्णुलोक गमन के तुरंत बाद से ही समय समय पर कई आदेश इनके भक्तों को होते रहे एवं इनके चमत्कारों की विशिष्ट तेजस्विता सामूहिक रुप

से लोगों में प्रदर्शित होती गई। स्वधाम गमन के पश्चात् बाबा ने मंदिर निर्माण सम्बन्धी आदेश स्वप्न द्वारा अपने परमभक्त पुत्र श्री देवकीनंदन को दिया, जो उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है :–

''चारों ओर एक अलौकिक प्रकाश फैला हुआ है, बीचों बीच एक गड्ढे के चारों ओर अनेक व्यक्ति खड़े है। मैं भी वहाँ था। मैने कहा कि गड्ढे को खोदो। गड्ढे को खोदने से उसके अंदर से श्री शिव परिवार, श्री हनुमान, मां दुर्गा व मां लक्ष्मी की प्रतिमाएँ निकली।

इसके बाद श्री बाबा गंगारामजी की दिव्य तेजोमय प्रतिमा उसमें प्रकट हुई। कुछ क्षण बाद एक सिंहासन में प्रतिमाएँ सुव्यवस्थित रूप में अपने आप गोल घेरे में सज गई। इन प्रतिमाओं में मध्य स्थान पर बाबा की प्रतिमा विद्यमान थी। फिर अखण्ड ज्वाला अपने आप प्रज्जवलित हो गई और सिंहासन क्रमशः आकाश की ओर ऊपर उठने लगा। ऊपर से पुष्प वृष्टि और जय–जयकार होने लगी। आकाश में चारों ओर प्रकाश फैला हुआ था। इतने में दिव्य आकाशवाणी सुनाई पड़ी– ''मैं कलियुग में विश्व कल्याण के लिए पंचदेवों के साथ प्रकट हुआ हूँ, मेरे मंदिर की स्थापना कराकर पूजा व उपासना की जाए।

इस दैवी आदेश के पश्चात् ही बाबा की जन्मभूमि झुंझुनूं में भव्य श्री पंचदेव मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ और उसमें विष्णु स्वरूप श्री बाबा गंगाराम, श्री शिव परिवार, आंजनेय हनुमान, भगवती दुर्गा एवं महालक्ष्मी की दिव्य प्रतिमाएँ स्थापित की गई। इस प्रकार स्वप्न को साकार रुप देते हुए बाबा गंगाराम का पंचदेवों के साथ दिव्य अर्चावतार के रूप में प्राकट्य हुआ।

कलिकाल में प्रगट भये, बाबा झुंझुनूंवासी,
गंगाराम नाम धरि आए, पंचदेव अविनाशी।।

बाबा गंगाराम अपनी संसार रुपी बगिया की दशा को देखने आए थे और जगत को भक्ति का मार्ग दिखाने के लिए अपने आत्मांश देवकीनंदन को यहाँ छोड़ गये थे।

राम के संग हनुमान पधारे, कृष्ण वीर अर्जुन को लाये,
बाबा के संग देवकीनंदन, शोभा मुख से वरणी न जाए।।

बाबा के परम आराधक – भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन

जिस प्रकार गंगाजी का प्रवाह निरन्तर बना रहता है, उसी प्रकार इस पृथ्वी पर भक्ति की गंगा भी अविरल बहती रहती है। यदि ऐसा न हो तो पृथ्वी पर धर्म का प्रभुत्व ही नहीं रह पाएगा और धर्म के लोप होने पर यह संसार एक क्षण भी नहीं रह सकता अर्थात् भक्ति ही ईश्वर का भान कराती है, जिसके आधार पर यह जगत स्थित है।

भक्ति की ऐसी ही अविरल गंगा प्रवाहित करने वाले भक्त हैं, भक्त शिरोमणि श्रीदेवकीनंदन। वे भक्ति के मूर्तिमान अवतार थे, प्रेम की सजीव मूर्ति थे। उनके जीवन में परम वैराग्य महान त्याग, अलौकिक प्रेम, अभूतपूर्व उत्कण्ठा और भगवान श्री विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम के लिए अद्भुत छटपटाहट थी। क्यों न हों? बाबा गंगाराम की लीला में एक विलक्षण पात्र के रूप में स्वयं उन्हीं के अंश से उनका जन्म जो हुआ था।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद में कल्याणी नदी के तट पर स्थित सफदरगंज नामक नगर में विक्रम संवत 1987 (सन् 1931) को होली के दिन ब्रह्म मुहूर्त में भक्त

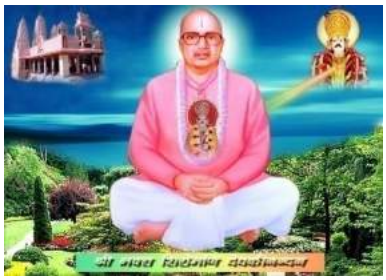

देवकीनन्दन ने मानव मात्र के कल्याण का संकल्प लेकर जन्म लिया। जिस होली को भक्त प्रहलाद ने अग्नि परीक्षा से गुजरकर भगवद् भक्ति को प्रतिष्ठापित किया था, उसी भगवद्भक्ति को पुनः प्रतिष्ठापित करने हेतु भक्त देवकीनन्दन ने अपने जीवन का लक्ष्य तो इंगित कर ही दिया था और फिर कल्याणी के तट पर जिसका जन्म हुआ हो उसे कल्याणकारी तो होना ही था। प्रभु बाबा गंगाराम ने जब इहलोक से अपनी लीलाओं को संवरण कर स्वधाम प्रयाण किया, उस समय भक्त देवकीनन्दन की अवस्था मात्र 6 वर्ष की थी। उनके लौकिक सान्निध्य एवं सेवा से वंचित रहकर भी भक्त देवकीनंदन के मन में उनकी छवि विद्यमान रहती थी एवं उनके तेज से वे स्वयं को प्रकाशमान पाते थे। उस अलौकिक तेज का अनुभव अवस्था बढ़ने के साथ–साथ और प्रगाढ़ होता गया। एक अज्ञातशक्ति उन्हें अपनी ओर खींचती रहती थी एवं वे उसी से प्रेरणा लेकर अपना मार्ग खोज लेते थे।

एक समय बाल्यकाल में जब भक्त देवकीनंदन नित्य की भांति सो रहे थे कि अचानक आये भीषण तूफान से आँगन में लगा हुआ विशाल वृक्ष समूल उखड़कर भवन को ढहाता हुआ उन पर गिर पड़ा। उनके ऊपर हजारों मन बोझ पड़ा था, बाहर कोहराम मचा हुआ

था, सबने उनके जीवन की आशा छोड़ दी थी। परन्तु अभी तो प्रभात की पहली किरण के समान उन्होंने जीवन यात्रा शुरू ही की थी। इससे भी बड़े–बड़े बोझ और दबाव उन्हें सहन करने थे, अतः उनका कोई क्या बिगाड़ सकता था। कुछ ही क्षणों में उन्हें आभास हो गया कि कोई शक्ति अपने हाथों से उन्हें बाहर निकाल रही है और सचमुच सबके देखते –2 वे बाहर निकल आये और सबको आश्चर्यचकित कर दिया। एक बार फिर उनपर बाबा की अहैतुकी कृपा की चर्चा हुई।

समय बीतता गया, भक्त देवकीनंदन भी बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश कर चुके थे। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा के समय ही उनकी विलक्षणता उजागर हो चुकी थी और उच्च शिक्षा उन्होंने राजस्थान के पिलानी नगर में रहकर ग्रहण की। पिलानी से स्नातक की उपाधि एवं प्रयाग से विशारद की उपाधि तो लोकाचारवश ग्रहण करनी थी, उनकी वास्तविक शिक्षा तो देवलोक से ही अलौकिक शक्ति प्रदान कर रही थी। अपने विद्याध्यन काल में भी उन्होंने अपने शांत, गंभीर एवं मधुर स्वभाव के कारण अपना अलग स्थान बना लिया था। विद्याध्यन के बाद जब वे वापस लौटे तो उनकी विद्वता से उनमें पहले से व्याप्त अलौकिक तेज और प्रखर हो गया।

अब भक्त देवकीनंदन के परिणय का अवसर आया। शिवसमान देवकीनंदन के लिए उन्हीं की योग्य शक्ति स्वरूपा पत्नी का चयन तो देवलोक में पहले से ही निश्चित किया हुआ था। तदनुसार धर्मपरायण गायत्री देवी का विवाह देवकीनंदन के साथ सम्पन्न हुआ। जैसे कोई सती स्त्री अपने पतिव्रत धर्म से अपने पति की रक्षा करती है, उसी प्रकार गायत्री देवी अपने धर्मानुरागी पति देवकीनंदन की सम्बल व शक्ति ही नहीं, प्रेरणा और मार्गदर्शक बनकर आई। जिस प्रकार प्रभु बाबा गंगाराम ने भक्त देवकीनंदन को अपनी लीलाओं का माध्यम बनाया था, उसी प्रकार गायत्रीदेवी को भी विवाह से पूर्व दर्शन देकर, अपने अलौकिक तेज का प्रकाश दिखाकर, अपनी लीलाओं का कृपापात्र बना लिया था। बाबा ने गायत्री देवी को विवाह के पूर्व ही स्वप्न में आशीर्वाद देते हुए कहा.' तुम मेरे भक्त की सहधर्मिणी बनकर मेरी देवलोकोत्तर लीलाओं का माध्यम बनोगी। तुम दया, करूणा और ज्ञान द्वारा मेरी भक्ति का प्रकाश फैलाओ।'' श्रद्धावनत

भक्तों के असाध्य कष्ट तो निर्मूल होते ही है, प्रभु कृपा से उनकी मनोकामनाएं भी सिद्ध होती है। भक्त देवकीनंदन और गायत्री देवी की आस्था भक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही थी। परन्तु उनके दैवीय प्रकाश से फैले यश को परिजन सहन नहीं कर पाते एवं द्वेष करते थे। द्वेष से शत्रुभाव पैदा होता हैं और ऐसे शत्रुभाव से दुष्ट प्रकृति का जन्म होता है। परन्तु सत्पुरुषों के शुभकार्यों का कोई अनिष्ट नहीं कर सकता है। वे उससे विचलित नहीं हो पाते। अब देवकीनंदन के लिए मान और अपमान सब समान थे। और वे अपने भक्ति–पथ पर अडिग थे। भगवद् भक्तों को सबसे अधिक कष्ट परिवार जनों से ही मिलता है। मीरा, नरसी, प्रहलाद के उदाहरण से सभी परिचित है। उनकी एक ही प्रबल इच्छा

रहती कि इस अलौकिक दिव्य तेज से सारे जगत को प्रकाशित करें। वे अपने आराध्य से यही प्रार्थना करते कि हे प्रभु इन्हें सद्बुद्धि दो, ये भी आपकी कृपा के पात्र बनें। परन्तु मनुष्य अपनी नियति स्वयं तय करता है। धर्मराज युधिष्ठिर ने दुर्योधन को धर्म की दुहाई देकर कितना समझाया, परन्तु अपने विनाश का मार्ग दुर्योधन ने स्वयं चुन लिया था, जो उसकी नियति थी। भक्त देवकीनंदन और गायत्री देवी ने मात्र परिवार के कल्याण के लिए ही जन्म नहीं लिया था, उन्हें तो यह ज्योति सारे विश्व में जलानी थी। अतः वे धैर्य के साथ सब कुछ सहन कर लेते व समय की प्रतीक्षा करने लगे।

अनासक्त कर्मयोगी – बाबा के परम आराधक भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन

गृहस्थ जीवन में तथा लोकाचार के लिए निःसन्देह जीविकोपार्जन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। व्यापार करने हेतु वे कलकत्ता पधारे। व्यापार, धन समृद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया। निष्काम कर्मयोगी की भांति उनके सारे कर्म बाबा को समर्पित थे। बाबा की कृपा से वे व्यापार में जिस कार्य में भी अपना हाथ लगाते वही सफल हो जाता था। व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा। परन्तु इसके साथ–साथ उनकी अध्यात्मिक प्रवृत्ति, सद्वृतियो की वृद्धि एवं नाम संकीर्तन में अनुराग भी निरन्तर

बढ़ता गया। जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए वे इसी बल पर प्रभु के पाद्–पद्मों तक पहुॅच गए। बंगभूमि के प्रकाण्ड विद्वान महामनीषी आचार्य श्री करूणामयजी सरस्वती का मार्गदर्शन और शुभाशीष उन्हें प्राप्त था। चारों धाम के शंकराचार्य एवं स्वामी करपात्री जी महाराज भी धार्मिक निर्णयों के अंतिम मत श्री करूणामयजी से मांगते थे और उसे शिरोधार्य करते थे। इसके अलावा भक्त देवकीनंदन और गायत्रीदेवी को अपने निवास पर अनेकों बार जगतगुरू शंकराचार्य स्वामी श्री निरंजनदेव तीर्थ पुरी के आतिथ्य का सुअवसर भी प्राप्त होता था। भक्त देवकीनन्दन के समान ही गायत्रीदेवी की शास्त्राध्ययन में रूचि और पौराणिक प्रसंगों की सुन्दर व्याख्या से सुविज्ञ आचार्य और विद्वान भी प्रभावित रहते । मूर्धन्य विद्वान आचार्य श्री गणेशराम सामवेदी, अन्यतम सप्ततीर्थ श्री रमेशचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य पं श्री वासुदेव ओझा उन सम्माननीय विद्वानों में से थे, जिनसे उनकी आध्यात्मिक परिचर्चा निरंतर होती थी।

अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित रहकर उन्होनें सद्गृहस्थ के कर्त्तव्य को बखूबी निभाया, परन्तु दूसरी ओर परिजन माया और वैभव के मद में उनका परिहास करते। अतः उन्होंने स्वधर्म की रक्षा के लिए अपना स्वाधीन व्यवसाय करने का मानस बनाया और मनुपुत्र नभग के पुत्र नाभाग की भांति अपने हिस्से में सिर्फ बाबा की कृपा और सानिध्य लेकर वे अपना अलग व्यापार करने लगे और कुछ ही दिनों में उन्होंने असम्भव को सम्भव बना दिया। ''जां पर कृपा राम की होई, तां पर कृपा करै सब कोई। '' जिन्हें भगवद्भक्ति की प्राप्ति हो गई हो, जो प्रभुप्रेम में मतवाले बन गए हो, उनके सभी कर्म लोक बाह्य हो जाते है। जो क्रिया किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाती है उसे कर्म कहते है। किन्तु केवल करने के निमित्त जो क्रियायें होती है, उन्हें 'लीला' कहा जाता है। भक्तों की सभी चेष्टायें इसी प्रकार की होती है।

इस प्रकार समय का कालचक्र घूमता रहा और अन्ततः उनके जीवन का वह समय सन्निकट आ गया, जिसकी उन्हें प्रतीक्षा थी। भगवान राम को राजा दशरथ ने कैकेयी के कहने से वनवास की आज्ञा दी थी, परन्तु भगवान राम तो स्वयं इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। बाबा के विष्णुस्वरुप दिव्य दर्शन एवं मंदिर निर्माण के आदेश ने भक्त देवकीनंदन को अभिभूत कर दिया।

बाबा ने कहा – ''उठो देवकी। तुम्हें जग–कल्याण करना है, तुम झुंझुनूं जाकर मेरी धर्म पताका फहराओ। मेरी भक्ति और आराधना का महत्व लोगो पर प्रकट करो। मेरे दिव्य अर्चावतार का उद्देश्य पूर्ण करो। मेरा मंदिर का निर्माण कर तुम प्रमाणित कर दो कि मेरे सगुण रुप की उपासना ही आनन्द प्राप्ति का एक मात्र सच्चा और सरल मार्ग है। जो भी प्राणी मेरी शरण में आएगा उसके सारे लौकिक कर्म शुद्ध हो जाएगें, वह सभी मनोवांछित फलों को भोगता हुआ अंत में मुझको प्राप्त होगा।''

जिस तरह कन्हैया बीच समर, अर्जुन को विश्व दिखाये थे।
उस तरह स्वप्न में बाबा गंगाराम ज्योति दिखलाए थे।।

जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीतोपदेश से निशंक बना दिया था, उसी प्रकार बाबा के दिव्य दर्शन से उनके मन के अधिशेष विकार तो पहले ही दूर हो चुके थे, अब बाबा की यथोचित अमृतमय वाणी से उनके ज्ञान के चक्षु खुल गये। भक्त देवकीनंदन ने गद्गद् कण्ठ से बाबा से कहा – ''प्रभो! मैं आपका तुच्छ दास हूँ। आपने मुझ पर अनुग्रह किया, आपकी आज्ञा पाकर मैं धन्य हो गया। आपके चरणों को हृदय में रखकर मैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ। मुझे मार्गदर्शन दीजिए, मुझ पर ऐसी कृपा कीजिए कि मैं आपके आदेशों की पालना कर सकूं, पंचदेवों के साथ आपका मंदिर निर्माण करवाऊँ। ''

श्री बाबा गंगाराम के भक्त श्री देवकीनन्दन सचमुच धन्य है, जिन्होंने बाबा के स्वप्नादेश को शिरोधार्य किया और झुंझुनूं में श्री पंचदेव मंदिर के निर्माण का बीड़ा उठाया। ईश्वर तो 'कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम' सभी कुछ करने में समर्थ है, परन्तु वे भक्तों के प्रेम के अधीन होकर अपनी लीलाओं को भक्त के माध्यम से सम्पन्न कराकर और उसका श्रेय अपने भक्तों को देकर संसार के सामने आदर्श उपस्थित करते है। भगवान राम अपने स्पर्शमात्र से ही भ्राता लक्ष्मण को जीवित कर सकते थे परन्तु भक्त के सम्मान में अभिवृद्धि करने हेतु ही भक्त हनुमान से संजीवन बूंटी मंगवाने का कौतुक करते हैं।

भक्त दास्य, सख्य, वात्सल्य, शांत एवं मधुर इन पाँचों भावों के द्वारा अपने प्रियतम की उपासना करते है, परन्तु इन पाँचों भावों में से भी दास्यभाव ही सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रधान है, अथवा दास्यभाव ही इन पांचों भावों का मुख्य प्राण है। भक्त देवकीनन्दन ने आजीवन दास्यभाव से

ही उपासना की। उनकी उपासना में प्रमुख अन्य भावों में भी दास्यभाव अव्यक्त रूप से जरूर छिपा होता था।

बाबा गंगाराम के दिव्य धाम – श्री पंचदेव मंदिर का उद्‌भव

बाबा की आज्ञा पाकर भक्त देवकीनंदन का रोम–रोम आनन्द से पुलकित हो उठा। उनकी भक्तिमति सहधर्मिणी परमसाध्वी गायत्री देवी ने समयानुकूल यथोचित वाणी में यही कहा–शुभ कार्य में देर क्यों? यह विचारकर वे अपने समस्त सांसारिक कार्यो को बीच में यूं ही छोड़कर बाबा के पावन धाम के शिलान्यास हेतु कलकत्ता से झुंझुनूं नगर पधारे। झुझूनूं नगर जो विलुप्त सरस्वती नदी के भू–भाग में स्थित है, ज्येष्ठ शुक्ला दशमी गंगादशहरा सम्वत् 2031 (31 मई 1974) के शुभ मुहूर्त में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच समारोहपूर्वक मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न कराया। मंदिर के प्रथम शिलाखंड को स्वंय भगवान शेष ने मानों अपने फन उठाकर धारण किया। मरूभूमि का कण–कण बाबा के दिव्य तेज को अपने में समाहित करता हुआ आलोकित हो उठा। शिलान्यास सम्पन्न होते ही उस शुभ घड़ी में असमय ही उमड़–घुमड़ कर हुई वर्षा से ऐसा प्रतीत होता था मानो विष्णु अवतारी के स्वागत में देवगण पुष्पवृष्टि कर हर्षध्वनि कर रहे हों। सचमुच अनेक जन्मों के पुण्यों के बाद ऐसे पावन प्रसंग जीवन में आया करते है।

मंदिर का निर्माण शीघ्रतिशीघ्र हो, ऐसी उनकी हार्दिक इच्छा थी। यही सोचकर आगामी गंगादशहरा यानि ठीक एक वर्ष पश्चात् मंदिर के शुभ उद्‌घाटन करने की उद्‌घोषणा उन्होंने उसी अवसर पर कर दी। परन्तु यह क्या? चार माह बीत गये पर अभी तो मंदिर निर्माण का कार्य शुरू ही नहीं हो पाया था। इतने विशाल व भव्य मंदिर का निर्माण इतने अल्प समय में आगामी गंगादशहरा तक कैसे हो पायेगा? ऐसी चिंता, भय व व्याकुलता से वे व्यथित हो जाते थे। परन्तु ऐसे अवसरों में भी सांसारिकता का समावेश उनकी किसी भी चेष्टा में

नहीं होता था। महापुरूषों को सत्कार्यो के मार्ग स्वतः ही प्राप्त हो जाते है और फिर जिसका निर्माण कार्य स्वयं भगवान विश्वकर्मा के हाथों में हो उसमें क्या देरी और क्या जल्दी ? देखते ही देखते मंदिर का विशाल भवन बनकर तैयार होने लगा। ज्यों–ज्यों मंदिर अपनी शिखा उठा रहा था, दूर–दूर से लोग वहां आते और इस शुभकार्य की सराहना करते।

शुभकार्यो में अवरोध आया ही करते है, जो साधक को साध्य से और अधिक

सन्निकटता प्रदान करने के लिए ईश्वर की प्रेरणा से ही आते है और इसका निराकरण कर वे अपने भक्त को और अधिक सम्बल प्रदान करते है। सोना जितना तपेगा उतना ही खरा होगा। भीषण झंझावतों और संकटों को उन्होंने प्रभु का प्रसाद माना। मृदुभाषी भक्त देवकीनन्दन ने छोटे–बड़े सभी वचनों को सहा, परन्तु कभी भी प्रत्युत्कार नहीं किया वरन् मन ही मन बाबा से ऐसे लोगों के कल्याण की ही कामना की। ऐसे अवसरों पर दया, करूणा, स्नेह और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति गायत्रीदेवी धैर्य और धीरज से उन्हें सम्बल प्रदान करती थी। हृदय में जब सरलता और सरसता का साम्राज्य स्थापित हो जाता है तब चारों ओर से सद्गुण आ–आकर उसको अपना निवास स्थान बनाने लगते है। वे न तो अपने को कर्ता समझते थे न कारण। उन्हें तो बस अपने प्रभु के आदेश का पालन करना था जिसमें उन्हें सम्पूर्ण विश्व का कल्याण प्रतिबिम्बित होता था।

गंगादशहरा, ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, सम्वत् 2032 (18 जून 1975) का दिन इतिहास के पन्नों में अमर हो गया। सच ही कहा है, जो विश्वासों का तप करते है वे ही भगीरथ की तरह पृथ्वी पर गंगा लाने में सफल होते है।'' भक्त देवकीनंदन के विश्वास एवं समर्पण से 'गंगाराम' नाम रूपी गंगा का भूतल पर अवतरण हो चुका था। बाबा गंगाराम के दिव्य अर्चावतार श्रीविग्रह सहित शिव परिवार, देवी दुर्गा, महालक्ष्मी व वीर हनुमान के श्री विग्रह के प्राण–प्रतिष्ठा समारोह ने 'न भूतो न भविष्यति ' की उक्ति को चरितार्थ कर दिया । बाबा गंगाराम का पावन धाम ''श्री पंचदेव मंदिर'' जनकल्याण का अपूर्व केन्द्र और बाबा की सगुण उपासना केन्द्र के रूप में शांति का अग्रदूत बन गया।

विष्णु का अवतार हुआ, मरूधर की किस्मत जागी।
कुंभ स्नान करे मरूधर में, रागी और अनुरागी ।।

मंदिर स्थापना के पश्चात् बाबा गंगाराम के प्रति लोक आस्था में निरंतर अभिवृद्धि होती गई। भक्ति की उत्कृष्ट परम्परा का प्रतीक श्री पंचदेव मंदिर जन–जन की सांसारिक समृद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नयन का केन्द्र बन गया। बाबा गंगाराम के दिव्य स्वप्नादेश एवं तत्पश्चात् श्री पंचदेव मंदिर के निर्माण की गौरवगाथा सर्वविदित है। बाबा का अलौकिक तेज घीरे– धीरे चारों ओर फैलने लगा। परन्तु अभी तो भक्त देवकीनन्दन के जीवन को अनेकों अग्नि परीक्षाओं से गुजरना था।

जिन पर भगवत् –कृपा होती है, और जो प्रभु के प्रेम में पागल बन जाते है, उनका बाह्य जीवन भी त्यागमय बन जाता है, क्योंकि जिसने उस अद्भुत प्रेमासव का एक बार भी पान कर लिया उसे फिर त्रिलोकी के जो भी संसारी सुख है, सभी तुच्छ से प्रतीत होने लगते है। अतः परमार्थ के पथिक भगवद्भक्त संसारी भोगों से स्वरूपतः दूर ही रहते है। भक्त देवकीनंदन ने अपने आपको भगवान विष्णु के चरणों में समर्पित कर दिया। स्वप्नादेश के आधार पर मन्दिर का निर्माण हो गया। भक्त देवकीनन्दन ने अपने आपको भगवान विष्णु के चरणों में समर्पित कर दिया। मन ही मन सोचते थे देवकीनन्दन, आखिरकार कैसे विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम के वास्तविक स्वरूप से इस संसार का परिचय हो।

अपनी करोड़ों की सम्पदा का तत्काल त्याग करने वाले भक्त देवकीनन्दन

भक्ति मार्ग पर चलने वालों को सदैव ही विकट विरोध एंव उपहास का सामना

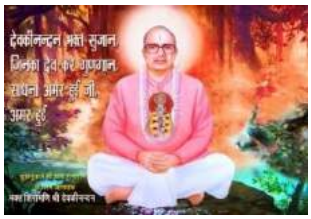

करना पड़ा है। इसी तरह भक्त देवकीनन्दन के भाई बन्धु व स्वजन स्नेही उनके मार्ग के अवरोधक हो गये। वे एक ओर थे तो दूसरी तरफ था देवकीनन्दन एंव गायत्री देवी का दृढ़ विश्वास। साथ अगर कोई था तो, बाबा गंगाराम की दिव्य ज्योति और अर्द्धांगिनी गायत्री देवी की प्रबल प्रेरणा और आत्मशक्ति। परिवारजनों ने, स्वार्थी लोगों ने देवकी का जीवन कांटों की राह पर लाकर टिका दिया। परन्तु डटा रहा वो हठयोगी, वो निस्पृह वैरागी अपने इष्ट की साधना में। इतिहास साक्षी है

कि भक्त प्रहलाद, मीरा, नरसी, तुलसीदास जैसे भक्तों को लोगों ने खूब सताया, पर वे उनके सम्बल और विश्वास को रोक नही पाए।

अपनों की विमुखता, अपनों का अत्याचार और अपनों के विवाद से और दृढ़ हो गया देवकी का विश्वास। जिस धन और ऐश्वर्य को आज के इस भौतिकवादी युग में सर्वोपरि माना जाता है, उसी धन, दौलत, चल अचल सम्पति और अपने हाथों से अर्जित करोड़ो की सम्पदा को भक्त देवकीनन्दन ने तुलसीपत्र हाथ में लेकर तिनके के समान क्षण भर में त्याग दिया।

वे सचमुच सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की भांति सब कुछ त्यागने में समर्थ थे। कोई दरिद्र मनुष्य भोगों के अभाव में वैराग्यवान बन जाये यह तो संभव है, किन्तु भोग विलास की पूरी सामग्री प्राप्त रहते वैराग्यवान होना, विषयों से दूर रहना, सचमुच भक्त देवकीनंदन

जैसे गृहस्थ – संत के ही वश का है। जल में कमल की भांति सम्पति और ऐश्वर्य के मध्य भी निर्लिप्त तो वे थे ही, अतः उनके लिए उपार्जन और त्याग दोनों ही समान थे। उनकी भार्या परम आराधिका गायत्री देवी ने अपने शरीर के स्वर्णाभूषण उतार कर उनका अनुकरण किया। कैसी विडम्बना थी, संताने विवाह के योग्य हो चुकी थी। स्वयं वैरागी पिता अपनी सन्तानों को विवाह का परामर्श दे रहे हो। लेकिन सभी सन्तानों का विवाह न करने का अडिग निर्णय उनके वैराग्य से उन्हें डिगा न सका।

त्याग और वैराग्य का ऐसा मंजर इस धरती पर शायद ही किसी ने देखा हो। मां ने समझाया कम से कम वंश की रक्षा के लिये तो विवाह कर लो। सबने समवेत स्वर में एक ही साथ उत्तर दिया– ईश्वर का कोई वंश नही होता और हम ईश्वर प्रदत्त योगी की सन्तान है। हमें बाबा की इस लीला में अपना कर्तव्य निभाने से वंचित न करें। अतः उन्हीं का अनुसरण करते हुए उनके आत्मांश दो पुत्र व चार पुत्रियों ने भी लौकिक भोग साधनों को पूर्णतः त्याग कर आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने की प्रतिज्ञा की एवं बाबा की भक्ति में पूर्णतया समर्पित हो गये। धन्य है भक्त देवकीनंदन और उनका वह परिवार, जिसने अर्थ, काम और लोभ प्रधान युग में त्याग का ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। कलियुग के घोर स्वार्थलिप्त काल में ऐसे अभूतपूर्व त्याग की सामर्थ्य बिना बाबा गंगाराम की कृपा के भला कैसे सम्भव हो सकती है। ''त्याग की इस घड़ी में मैं कहीं असत्य आचरण न कर बैठूं।'' यह विचारकर उन्होंने अपने एक दांत में लगा हुआ स्वर्ण, जो दांत सहित ही

निकाला जा सकता था, असह्य पीड़ा को सहते हुए दांत सहित निकलवा दिया। उनके लिए कौन सा ऐसा दुष्कर कार्य था और कौन सा ऐसा त्याग था, जिसे वे न कर सके।

भक्त देवकीनन्दन के सत्यव्रत को देखकर भक्तवत्सल करूणानिधान बाबा गंगाराम भी द्रवित हो उठे। जब मेरे भक्त ने ऐसा संकल्प लिया है तो कहीं मेरी प्रतिमा के स्वर्णाभूषण और पूजा के रजत पात्र मेरे भक्त के सत्यनिर्वाह में बाधक न बन जाये, शायद इसी कारण मंदिर की समस्त स्वर्ण–रजत सम्पदा का वितरण भी उन्हीं की प्रेरणा से कर दिया गया। सत्य ही धर्म है और सत्य पर ही यह सृष्टि स्थित है। उसी सत्य के मार्ग पर चलकर कलियुग में नारायण रूप में अवतरित बाबा गंगाराम के चरणों में राजा अम्बरीष की भांति अपने को सपरिवार, 'सर्वतोभावेन' समर्पित कर दिया। ये तुच्छ भौतिक पदार्थ तो सहज ही सुलभ है, परन्तु बाबा गंगाराम की लीला माधुर्य तो जन्म जन्मान्तरों में भी मिलनी मुश्किल है।

भक्त देवकीनन्दन और माता गायत्री देवी ने सर्वथा सिद्ध कर दिया कि बाबा की कृपा माया से परे है, उनकी उपासना ही माया से छुटने का एक मात्र उपाय है, उन पर विश्वास करो, उनकी आराधना करो, उनके नाम संकीर्तन की रटन लगाओ और उनका गुणानुवाद करो। मंदिर के अतीव शान्त, पारलौकिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में भक्त देवकीनन्दन का जीवन बाबा के श्री विग्रह की सेवा, ध्यान, संकीर्तन और निर्निमेष नेत्रों से बाबा की अनूप रूप माधुरी का आस्वादन करते हुए व्यतीत हो रहा था। बाहरी जगत से अलग रहकर संसारियों के संसर्ग को भी उन्होंने त्याग दिया। इस कार्य में उन्हें जो वेदना और पीड़ा होती थी वह भी परित्यक्त के लिए होती थी, स्वयं के लिये नहीं। वे प्रशंसा और आलोचना दोनों भावों में सम रहते थे। दुर्जनों के दुर्वचनों को भक्त देवकीनन्दन अपने आन्तरिक विकारों को दूर करने वाली औषधि मानते थे। संयम, नियम, तप और व्रत से आत्मतोष का अनुभव करते हुए मंदिर में उगे शाक के पत्तों को ही बाबा को समर्पित कर उसे अमृततुल्य प्रसाद की भांति सपरिवार ग्रहण करते थे। ''ऊँ तत्सत् श्री गंगाराम देवाय नमः'' महामंत्र को उन्होंने हृदय में धारण किया और 'तत्सत्'

को अपने जीवन में चरितार्थ कर दिया। विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम की एक अपूर्व ज्योत उनके हृदय में जलती रहती थी, जिनके दर्शन मायाबद्ध जीव को इस पंचभौतिक शरीर से हो ही नहीं सकते। प्रेम, उत्कंठा और भावावेश में वे बाबा से साक्षात् वार्तालाप करते प्रतीत होते। पूर्ण समर्थ की पूजा, उपासना, ध्यान, साधना करते हुए वे स्वयं भी पूर्ण समर्थ हो चुके थे, बाबा और उनके बीच की सारी दूरी समाप्त हो चुकी थी।

भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन की चिता पर अलौकिक चमत्कार

शायद अब वह समय आ चुका था जब इस लोक से अधिक उस लोक में प्रभु बाबा गंगाराम को भक्त देवकीनंदन की आवश्यकता प्रतीत हुई। उस दिन वैशाख बदी चतुर्थी संवत् 2049 (21–4–92) की पूर्व संध्या पर भक्त देवकीनंदन अन्य दिनों की अपेक्षा अत्यधिक प्रफुल्लित और प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

उनके चेहरे से एक अद्भुत तेज सा निकल रहा था। शायद प्रभु से मिलने की उत्कंठा थी। आनंदभाव से बाबा की सेवा में लीन रहकर नित्य सत्संग में अपने मनोभावों को प्रकट करते हुए उन्होंने कहा– ''सत्य ही परमात्मा का स्वरूप है। सत्य सनातन, अविनाशी और अविकारी होता है। सत्य की उपेक्षा से ही यह जगत दुखी हो रहा है। कलिमल से ग्रस्त इस संसार में सत्य को एक पग रखने की भी जगह नहीं है। प्रभु बाबा गंगाराम ही जीवन के एक मात्र सत्य है, वे ही सारे धर्मो के एक मात्र ध्येय है। मैं उन्हीं की शरण ग्रहण करूंगा।'' ऐसा निश्चय कर बाबा के पावन चरणोदक का पानकर एवं मुख से बाबा का नाम उच्चारित करते हुए उन्होंने यह शरीर छोड़ दिया। दिवंगत ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई।

भक्तों की लीला संवरण का उल्लेख करना तो अनधिकार चेष्टा ही है। परन्तु जिसके महाप्रयाण में सत्य का प्रमाण छिपा हो, जगत के लिए संदेश हो और सत्पात्रों के लिए आशीर्वाद हो उसे लीला का ही अंश मानना चाहिए। उन्होंने अपने जीवन का स्वर्णिम अध्याय तो चिता पर ही लिखा था। जीवन की अंतिम अग्नि–परीक्षा में खरे उतरकर उन्होंने प्रकृति को भी पराजित कर दिया।

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभु का नियम बदलते देखा,
अपना मान रहे ना रहे पर भक्त का मान न टलते देखा।

सत्य ही है, अपने भक्त के लिए भक्तवत्सल प्रभु प्रकृति के नियम भी बदल देते है। सचमुच भक्त की सामर्थ्य और शक्ति असीम होती है।

जिन्होंने अपना तपस्यामयी जीवन बाबा के पावन धाम को समर्पित कर दिया हो उन्हें मंदिर से दूर कैसे ले जाते। अतः मंदिर की ही भूमि में चिता तैयार की गई। परलोकगमन के पश्चात् भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन का दाहिना हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा हुआ था। अतः उसी रूप में उनकी अंतिम यात्रा मंदिर परिक्रमा करती हुई चिता स्थल तक पहुँची। चिता पर लेटाकर नियमानुसार उनके दोनों हाथ पीछे कर दिए गए।

जब पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित किया जा रहा था, उनकी भक्तिमती भार्या गायत्री देवी ने सूर्य को प्रणाम कर उनकी साक्षी में सभी उपस्थित लोगों के सामने बाबा से प्रार्थना की और कहा –'' हे प्रभु! आपके भक्त का यह शरीर कुछ ही देर में अग्नि को समर्पित हो जाएगा, भक्त जन आपकी भक्ति का प्रत्यक्ष प्रभाव देखना चाहते है, अतः अगर तन–मन–धन से इन्होंने आपकी भक्ति की हो तो कुछ चमत्कार दिखाइए।'' उसी समय जलती हुई चिता में गड़गड़ाहट हुई व सैकड़ों जनों की उपस्थिति में वही दाहिना हाथ पीछे से निकलकर ऊपर उठने लगा व आशीर्वाद देता हुआ लहराने लगा, मानो दुनिया को सुख शांति के साथ सत्कर्म के पथ पर अग्रसर होने का संदेश दे रहे हों। शिव समान मस्तक से जल की धारा बहने लगी और जल प्रज्जवलित अग्नि में ही गिरता रहा। चेहरा बालरुप में परिणित हो गया। अद्भुत–अद्भुत चमत्कार कुछ ही क्षणों में उनके पार्थिव शरीर से प्रगट हुए। सारा वातारण भक्त और भगवान की जय–जयकार से गूंज उठा। ये किसी पौराणिक कथा के अंश नहीं, वरन् उस समय खीचे गये छायाचित्र इसके प्रमाण है।

त्याग, वैराग्य और भक्ति की सजीव मूर्ति भक्त शिरोमणि देवकीनंदन , जिनका जीवन ही अग्निमय था, उन्हें अग्नि भी ससम्मान विदाई क्यों न देती? गंगा की तरह जो पावन और निर्मल हों, उनके मस्तक से जल की धारा क्यों न बहती?

जीवन भर देने के लिए ही जिनका हाथ उठा रहा हो, ऐसे महान भक्त अपने नश्वर शरीर से प्रज्जवलित अग्नि में से हाथ उठाकर, आशीर्वाद कैसे न दें? बालक के समान

निश्छल और सरल जिनका जीवन रहा हो, वह बालस्वरूप में ही अपने प्रभु से मिलने क्यों न जाए?

यह सृष्टि महामाया शक्ति के ही अवलम्ब से अवस्थित हैं। सर्वशक्तिमान शिव भी शक्ति के बिना शव बन जाते हैं। शक्ति प्रच्छन्न रहती है। ऐसी शक्ति स्वरूपा समर्पित भार्या गायत्री देवी की करूण पुकार सुनकर बाबा द्रवित कैसे न होते और सूर्यदेव साक्षी देने के लिए अपने रथ को क्यों न रोकते?

भक्तगण इन अलौकिक दृश्यों को उत्सुकता और भाव विभोर होकर निहारते रह गये। ये चमत्कार नहीं वरन् उस परमयोगी की साधना और आराधना के सबल प्रमाण थे जो इस कलियुग में उन्हीं के योग्य थे।

भक्त शिरोमणि देवकीनंदन अपने सत्स्वरूप में अवस्थित होकर अब भी प्रत्यक्ष हैं। वे नित्य हैं। वे आत्मा से ही नहीं शरीर से भी विराजमान है। हृदय से बाबा का नाम पुकारते ही वे भक्त हनुमान की तरह उपस्थित होते है। जिस प्रकार से श्री राम भक्त श्री हनुमानजी ने अपना सीना चीरकर सियारामजी के दर्शन कराकर अपनी सच्ची भक्ति का प्रमाण दिया था, वैसे ही भक्त शिरोमणि देवकीनंदनजी ने जलती चिता से आशीर्वाद देकर यह प्रमाणित कर दिया कि भक्त की सामर्थ्य और शक्ति का कोई पार नहीं है। और वैसा चमत्कार इस कलियुग में भी सम्भव है।

जिन्होंने अपने जीवन के एक–एक क्षण को बाबा के लिए समर्पित कर दिया, ऐसे भक्त देवकीनंदन के जीवन वृतान्त को शब्दों में लिखना असम्भव है।उनकी तपस्या, साधना और सामर्थ्य के सम्बन्ध में कुछ भी कहना वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को लज्जित करना है। वे मूर्तिमान तप और धर्म है, साधना के साकार स्वरूप है।

हे देवकीनन्दन तुमने, भक्ति का दीप जलाया ।
तेरे रोम–रोम में बाबा का, पावन मंत्र समाया।।

बाबा की आज्ञा पाकर, मंदिर निर्माण कराए,
श्री पंचदेव मंदिर ज्यूँ , बैकुण्ठ धरा पर लाए,
भक्ति के रंग में रचकर, भक्तों को मार्ग दिखाया।।

तप, त्याग भक्ति की तूने, त्रिवेणी धार बहाई,
बाबा की पावन महिमा, जन–जन तक है पहुँचाई
सत मार्ग पे चलकर अपना, जीवन आदर्श बनाया।।

जब महाप्रयाण किया तो एक चमत्कार दिखलाया
आशीष दिया जन–जन को बाबा की थी ये माया
जिसने भी शीश झुकाया, वो भक्त का आशीष पाया।।

पंचदेव मंदिर का कण–कण भक्त शिरोमणि देवकीनंदन और माता गायत्री देवी के त्याग, तपस्या और समर्पण का साक्षी है और उसमें उनका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उन जगद्वन्द्य भक्त शिरोमणि देवकीनंदन को उनके आराध्य, सभी धर्मो के एक मात्र ध्येय विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम सहित कोटिशः नमन है।

बाबा गंगाराम की अनन्य साधिका– मां गायत्री देवी

श्री पंचदेव मंदिर के संस्थापक भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन की धर्मपत्नी एवं बाबा गंगाराम की परम आराधिका ममतामयी त्यागमूर्ति माता गायत्री देवी मार्गशीर्ष शुक्ल

दशमी संवत 2074 (दिनांक 29 नवम्बर,2017) को मंदिर परिसर में बाबा गंगाराम का नाम उच्चारित करते हुए सदैव के लिए बाबा की ज्योति में विलीन हो गयी। मंदिर परिसर में भक्त शिरोमणि की समाधि के पार्श्व में ही माता गायत्री देवी की समाधी बनाई गई। बाबा गंगाराम के भक्त देश–विदेश से अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करने उमड़ पड़े। मंदिर प्रांगण बाबा गंगाराम सहित परम आराधिका माता गायत्री के जैकरों से गूंज उठा।

बाबा गंगाराम की लीला में लाखों भक्तों की पथ–प्रदर्शिका माँ गायत्री का स्थान पंचदेव मंदिर के इतिहास में बहुत ऊँचा है। उनको बाबा गंगारामजी और उनके श्रद्धालुओं के मध्य सेतु के रूप में महसूस किया जाता था। घोरातिघोर संकटों से घिरने पर भी बाबा गंगारामजी के श्रद्धालुओं को यह पक्का विश्वास रहता था कि वे पंचदेव मंदिर, झुंझुनू जाकर माथा टेकेंगे और माँ गायत्री के शुभाशीष व उनके कर–कमलों से मंदिर की रज प्राप्त करते ही उनके तमाम दुखों का शमन हो जायेगा।

माता गायत्री के जीवन चरित्र को दो शब्दों में बखान करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। वे विलक्षण भक्त, परम तपस्विनी थी। वे अध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण शक्तिस्वरूपा थी। प्रेम करुणा, दया, परोपकार, धैर्य की प्रतिमूर्ति माता गायत्रीदेवी ने लाखों भक्तों को उचित मार्गदर्शन व आशीर्वचन देकर उनका जीवन बदल दिया।

माता गायत्री के मुख से जो भी निकल गया वो भक्तों के लिए मंत्र हो गया। पौराणिक ग्रंथो का उन्होंने गहन अध्यन कर उनका सूक्ष्म विश्लेषण किया था और उन्हें अपने जीवन में उतारा था जो उनके उपदेश, उनकी वाणी में साफ झलकता था। उनके उपदेशों में माँ सरस्वती विराजमान होकर लोगों का मार्गदर्शन करती थी।

कोलकाता महानगर में करीब 40 वर्ष पूर्व वैभवपूर्ण जीवन त्यागने के पश्चात् वे श्री पंचदेव मंदिर झुंझनू के परिसर में सतत साधना में लीन हो गई थी। मान–सम्मान, प्रचार–प्रतिष्ठा से दूर सादा जीवन जीनेवाली माँ अपने अन्दर विराट संसार समेटे हुए थी। वे सदा भक्ति के चैतन्य लोक में रहती थी और प्रत्येक के हृदय की बात जानती थी।

सीता, अनुसुईया व सावित्री की भांति वे सत्य व त्याग की प्रतिमूर्ति थी। आज से 25 वर्ष पूर्व भक्त शिरोमणि देवकीनंदन के महाप्रयाण के समय सूर्य के समक्ष उनकी करुण पुकार पर भक्त शिरोमणि देवकीनंदन की चिता पर हुए अलौकिक चमत्कार उनकी भक्ति की पराकाष्ठा को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

उनकी तपस्या व साधना का ही परिणाम है कि आज बाबा गंगाराम के असंख्य भक्त देश विदेश में फैले हुए है। आज भी उनकी भोली, ममतामयी, दयामयी सूरत लाखों भक्तों के हृदय में विराजमान है और रहेगी।

बाबा गंगाराम की परम साधिका एवं भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन की सहधर्मिणी भक्तिमती गायत्री देवी बाबा की लीलाओं की प्रबल वाहक थी।वे करूणा, प्रेम और दया की मूरत व मातृत्व की जीवन्त विग्रह थी। भक्त शिरोमणी देवकीनन्दन के चिता पर हुए चमत्कारों और देह त्याग के पश्चात् भी मां की आँखों से अश्रुधारा नहीं बही, वे ही मां अपने भक्तों के छोटे से कष्ट पर भी इस प्रकार द्रवित हो जाती, मानो उनके हर संकट को स्वयं ही धारण कर, उसे मुक्त कर देगी। उनकी करूण पुकार पर प्रभु बाबा गंगाराम कैसे द्रवित न होते और भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन के पार्थिव शरीर को चैतन्य क्यों न करते।

उनके उपदेश–निर्देश, उनकी ज्ञानमयी वाणी, पौराणिक संदर्भो की व्याख्या, सब उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों पर आधारित रहता था, जो भक्तों के लिए अति कल्याणकारी होता। वे बड़े सहज भाव से बाबा की भक्ति के विषय में उपदेश देती। उनकी उपस्थिति में एक आध्यात्मिक परिवेश बन जाता था तथा कृपा और शांति के स्पर्श की स्पष्ट अनुभूति होती थी। उनकी सारी साधना आश्रितों के लिए थी, स्वयं के लिए नहीं। सचमुच बाबा के किसी

भी भक्त को सदैव यह एहसास रहता है कि भक्त शिरोमणि के आशीर्वाद का हाथ और मां

की कृपा सदा उसके साथ है। वे एक पल भी हम से दूर नहीं है।

धन्य है, कलियुग में शक्ति स्वरूपा मां गायत्री की साधना ,तपश्चर्या और भक्ति को। विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम की दिव्य शुद्ध, सत्वमयी लीलाओं की साकार प्रतिमूर्ति मां गायत्रीदेवी की कठोर साधना भक्तों को युगों–युगों तक आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती रहेगी, मार्गदर्शन करती रहेगी।

बाबा गंगाराम मंदिर की रज एवं जल का माहात्म्य

आज बाबा गंगाराम के मंदिर की मिट्टी जिसे रज कहते है, भक्तों के लिए अमूल्य प्रसाद बन गई है। भक्तजन इसे अपने माथे से लगाते हैं और बड़े चाव से प्रसाद स्वरूप अपने साथ ले जाते है। इस रज में भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन के आशीर्वाद का तेज भरा हुआ है। अतः इस रज को लगाने से एवं घर में छिड़कने से सुख–सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। बड़े–बड़े असाध्य रोगों का भी इससे निवारण होता है। आशीर्वाद से भरी हुई इस रज को लगाने से कितने ही निःसंतानों की गोदियां भर गई है।

मंदिर की रज के समान ही बाबा के कूप का जल भी गंगाजल के समान पवित्र एवं पावन है। जैसे गंगाजल में कभी कीड़े नहीं पड़ते वैसे ही इस जल को भी कितने ही वर्षो तक प्रयोग में लाएं, कभी भी कीड़े नहीं पड़ते। भक्तजन रज के समान ही इस जल को भी ले जाते हैं। इस जल को घर में छिड़कने से एवं मुंह में लेने से रोग –कष्टों का निवारण होता है एवं घर में सात्विक वातावरण का निर्माण होता है।

श्री बाबा गंगाराम दोहावली

विष्णु अंश से प्रगट भये , करने जग कल्याण ।
बाबा गंगाराम हैं, सत्य धर्म की खान ।।1।।

गंगा की पावनता इनमें, राम प्रभु से महान ।
बाबा गंगाराम को, भजता सकल जहान ।।2।।

गंगाराम एक मंत्र जो, करता है कल्याण ।

गंगा पार उतारती, राम गुणों की खान ।।3।।

त्रेता में श्रीराम बने , द्वापर में घनश्याम ।
कलियुग में आये प्रभु , बनके गंगाराम ।।4।।

हनुमत भजते राम को , मीरा के घनश्याम ।
देवकीनन्दन के हृदय, बसते गंगाराम ।।5।।

कलियुग के इतिहास में, भक्ति की है शान ।
देवकीनन्दन दे गये, चिता पे प्रबल प्रमाण ।।6।।

गायत्री विनती करी, पत राखो करतार ।
सूर्य का रथ भी थम गया,सुनके करूण पुकार।।7।।

गंगाजी जग पावनी , सबके आश्रय राम ।
दोनों के संगम बने , बाबा गंगााराम ।।8।।

भजले भक्त शिरोमणि , देवकीनन्दन नाम ।
जांके सुमिरन से मिले, बाबा गंगाराम ।।9।।

झुंझनूं जिनका धाम है , विष्णु के अवतार ।
बाबा गंगाराम की , बोलो जय जयकार ।।10।।

प्रत्येक अवतार में प्रभु अपनी शक्ति के साथ प्रकट होते है, जैसे सीता–राम, राधा–कृष्ण, गौरी–शंकर, लक्ष्मी–नारायण, गंगा–राम। इसी प्रकार इस अवतार में प्रभु अपनी नित्य शक्ति गंगा के साथ प्रकट हुए एवं बाबा गंगाराम ने अपना नाम 'गंगाराम' धारण किया। कलियुग में दो ही कार्य मनुष्य को भुक्ति–मुक्ति दिला सकते है। एक तो राम–नाम और दूसरा गंगा स्नान। शास्त्रों में वर्णित है।

राम रामेति–रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने।।

अर्थात् राम नाम भगवान के सहस्त्रनामों में सर्वश्रेष्ठ है और इसकी बराबरी का अन्य कोई नाम नहीं है।

गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
सर्वपाप विमुच्यते, विष्णु लोकं स गच्छति।।

अर्थात् गंगा–गंगा ऐसा उच्चारण सौ योजन दूर से भी मनुष्य करे तो उसके सारे पाप मिट जाते है और वो विष्णुलोक जाने का अधिकारी हो जाता है। अतः 'गंगाराम' नाम के सम्मिलित उच्चारण का माहात्म्य तो अवर्णनीय है। गंगा के समान पापनाशिनी और राम के समान मुक्तिदाता और

कौन हो सकता है। अतः मानव मात्र के कल्याण के लिए 'गंगाराम' नाम से बढ़कर शायद और कोई नाम नही है।

गंगा के संग राम मिलाकर गंगाराम कहाये हो ।
कलियुग में भक्तों के हित तुम गंगाधार बहाये हो।।

''ऊं तत्सत् श्री गंगाराम देवाय नमः'' महामंत्र का जप फलदायी

बाबा को पाना हो और उनकी निश्छल भक्ति करनी हो तो ''ऊं तत्सत् श्री गंगाराम देवाय नमः'' का जाप करना चाहिए। यथाशक्ति इस मंत्र का जप करने से इच्छित फल अवश्य प्राप्त होता है। इस महामंत्र का जप कर लाखों भक्त जन लाभान्वित हो रहे हैं।

बाबा गंगाराम के धाम में मनाये जाने वाले उत्सव

बाबा गंगाराम के धाम श्री पंचदेव मंदिर में यूं तो पूरे वर्ष भर ही भक्तों का तांता लगा रहता है। विवाहादि की जात, मुण्डन संस्कार, दर्शन एवं सवामणी करने हेतु श्रद्धालु बाबा के धाम में आते रहते है परन्तु उत्सव एवं मेले के अवसर पर शोभा अवर्णनीय होती है। बाबा के धाम में मुख्य रूप से तीन पर्व धूमधाम से मनाये जाते है।

आशीर्वाद दिवस उत्सव – यह उत्सव वैशाख कृष्ण चतुर्थी को मनाया जाता है। जैसा कि नाम से विदित होता है, इसी दिन भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन की चिता से अलौकिक चमत्कार हुए थे। उसी आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिए भक्तजन आशीर्वाद दिवस धूमधाम से मनाते हैं। अपने–2 शहरों में भक्तजन सामूहिक रूप से भजन– कीर्तन का कार्यक्रम करते हैं।

गंगादशहरा महोत्सव– बाबा के पावन धाम श्री पंचदेव मंदिर की स्थापना ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (गंगादशहरा) के पावन दिन हुई थी। अतः इस दिन मंदिर में स्थापना दिवस (पाटोत्सव पर्व) के रूप में आयोजन होता है। बाबा के सहस्त्राभिषेक के दर्शन, भजन–कीर्तन एवं समारोह में देश के कोने–कोने से भक्तगण यहां आते है।

बाबा गंगाराम जयन्ती– बाबा की पावन जयन्ती (जन्मोत्सव) प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी को धूमधाम से मनाई जाती है। बाबा के इस अवतरण दिवस को झूलनोत्सव के रूप में मनाया जाता है। घर–घर में बाबा का झूला सजाया जाता है एवं भक्तगण उपवास, भजन कीर्त्तन एवं रूचिकर प्रसाद अर्पित कर बाबा की मनुहार करते है।

बाबा गंगाराम की आराधना कैसे करें

विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम की आराधना अनेकों तरह से की जा सकती है। बाबा की आराधना के लिए घर में बाबा के चित्र के सम्मुख बाबा की आरती व चालीसा का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। बाबा को तुलसीदल अथवा तुलसी– माला अर्पित करें। घर पर मांगलिक अवसरों पर बाबा का कीर्त्तन करवाये। अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए बाबा के धाम की यात्रा करें। प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष की दशमी को बाबा की ज्योत प्रज्जवलित करके पूजा करनी चाहिए एवं भजन कीर्त्तन करना चाहिए।

बाबा गंगाराम जी की अहैतुकी कृपा से सभी लाभान्वित हो, इसी उद्देश्य से संकीर्तनों का विशाल आयोजन जन सहयोग से गांव–2 और नगर–नगर में विभिन्न सेवा समितियों द्वारा होता है। ये समितियां विभिन्न मेलों आदि में निःशुल्क भोजन व्यवस्था, निर्धन छात्रों की शिक्षा में सहयोग और विभिन्न सेवा कार्यो में संलग्न रहती है। श्री बाबा गंगाराम और उनके पावन धाम श्री पंचदेव मंदिर , झुंझुनूं से संबधित सभी जानकारी इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है। वेबसाईट www.babagangaram.com पर जाकर कोई भी व्यक्ति बाबा के प्रचार–प्रसार, भजन – कीर्त्तन एवं संस्थाओं की विस्तृत जानकारी ले सकते है। इसके अलावा धार्मिक चैनल आस्था, संस्कार पर भी बाबा के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। आस्था चैनल पर नियमित रूप से प्रत्येक रविवार को दोपहर 1:30 बजे से बाबा के महोत्सवों का कार्यक्रम दिखाया जाता है।

वस्तुतः बाबा गंगारामजी भक्तों के लिए प्रत्यक्ष फलदाता श्री सत्यनारायण स्वरूप हैं। भक्त बाबा के प्रति पूरी श्रद्धा विश्वास व पूर्ण समर्पण का भाव रखकर ही इनकी महिमा को समझ सकता है और प्रभु चरणों मे स्थान पा सकता है। वही इस शाश्वत् मनुष्य जन्म को

धन्य करता है। श्री पंचदेव मंदिर के निर्माण के बाद से निरंतर ही बाबा ने ऐसे चमत्कार दिखलाए है, जिनसे ह्रदय में स्वतः ही बाबा के प्रति पूर्ण विश्वास हो जाता है।

बाबा गंगाराम के जैसा, कहीं न देखा दानी ।
जिनके आर्शीवाद से तर गए जग के लाखों प्राणी।।

इनके चमत्कारों को गिनना पृथ्वी के रज कणों को गिनने के समान है। यही कारण है कि बाबा के प्रति भक्तों की श्रद्धा दिन – प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

पृथ्वी को पावन करे गंगाजी की धार,
तुलसी इस संसार में राम नाम आधार।
झुंझुनूं में प्रगटे प्रभु, विष्णु के अवतार,
बाबा गंगाराम की बोलो जय जयकार।

———जय बाबा गंगाराम———

****